गांधीवादी दर्शन का वर्तमान अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

Vimla kumari

Research scholar (political science)
Jai Narayan vyas University, Jodhpur

प्रस्तावना

वैश्वीकरण के नाम पर शुरू हुए आर्थिक सुधारों से गरीबी, मूल्यवृद्धि, बेरोजगारी, विषमता, अपराध, उपभोक्ता संस्कृति आदि में वृद्धि हुयी है। मात्र लाभ कमाने के लिए बाजार अर्थव्यवस्था में उत्पादन किया जा रहा है और प्रौद्योगिकी के माध्यम से प्रकृति से अन्याय हो रहा है। गांधीजी ने प्रकृति एवं मनुष्य के नैसर्गिक सम्बन्धों, स्थायीविकास एवं समुचित तकनीक पर जोर दिया। गांधीवादी दर्शन सादगीपूर्ण जीवन शैली स्वदेशी की भावना और विकेन्द्रीकरण पर बल देता है। समकालीन वैश्वीकरण के दौर में गांधीवादी दर्शन का महत्व और अधिक बढ़ गया है। वैश्वीकरण केनाम पर शुरू हुए आर्थिक सुधारों से गरीबी, मूल्यवृद्धि, बेरोजगारी, आर्थिक विषमता, अपराध, उपभोक्ता संस्कृति,नगरीकरण, केन्द्रीकरण आदि प्रवृत्तियों में वृद्धि हुयी है। इन विभिन्न समस्याओं का हल गांधीवादी प्रतिमान के अन्तर्गत मिलता है। सत्य व अहिंसा पर आधारित गांधीवादी प्रतिमान सभी समस्याओं के लिए नैतिक युक्ति प्रस्तुत करता है। गांधीवादी दर्शन सादगीपूर्ण जीवन शैली, स्वदेशी की भावना, विकेन्द्रीकरण, मानव श्रम प्रधानग्राम अर्थव्यवस्था, बुनियादी रोजगारपरक शिक्षा, आत्मनिर्भर राष्ट्र, प्रन्यास भावना जैसे सिद्धान्तों पर आधारित है।इस गांधीवादी प्रतिमान को यदि वर्तमान वैश्विक अर्थव्यवस्था के संदर्भ में अपना लिया जाए तो एक सुखद एव ंन्यायपूर्ण विश्व अर्थव्यवस्था का निर्माण किया जा सकता है। क्योंकि भौतिक समस्याओं के नैतिक निदान पर आधारित यह दर्शन विश्व को एक नवीन दृष्टि प्रदान करता है।

विकासशील देशों ने नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की मांग उठायी है जो वस्तुतःवैश्विक अर्थव्यवस्था के विकेन्द्रीकरण की मांग ही है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के द्वारा विश्व के उत्पादन, पूंजी व तकनीक पर नियंत्रण कर लिया है। जिससे वैश्विक स्तर पर केन्द्रीकरण व आर्थिक असमानता निरन्तर बढ़ती जारही है। समकालीन वैश्वीकरण के दौर में गांधीवादी दर्शन का महत्व और अधिक बढ़ गया है। महात्मा गांधीइस तथ्य पर बहुत अधिक बल देते थे कि आर्थिक पक्ष और नैतिक पक्ष एक–दूसरे के पूरक है। अर्थव्यवस्था कोनैतिकता से पृथक् नहीं किया जा सकता अपितु आर्थिक विकास भी नैतिकता पर ही आधारित होना चाहिए

समकालीन विश्व में केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। आज विश्व के आर्थिक संसाधनों पर कुछ चुनिंदा विकसित देशों का ही नियंत्रण है। पश्चिम के ये पूंजीवादी विकसित देश गरीब विकासशील देशों का बड़े पैमाने पर शोषण कर रहे है। गांधीजी केन्द्रीकरण को भी हिंसा का ही प्रतीक मानते हैं। उनके अनुसार शोषण व असमानता का प्रमुखकारण ही आर्थिक क्षेत्र में केन्द्रीकरण है। इसके विकल्प के रूप में उन्होंने अहिंसक अर्थव्यवस्था के विचार को प्रस्तुत किया है। इसी अहिंसक अर्थव्यवस्था को वे विकेन्द्रीत अर्थव्यवस्था का नाम देते हैं। इसकी संरचनाविकेन्द्रीत होगी अर्थात् इसमें उत्पादन एवं वितरण सम्बन्धी कार्य को स्थानीय स्तर पर किया जाएगा। इसग्रामीण अर्थव्यवस्था के संचालन में विभिन्न कुटीर एवं ग्राम उद्योगों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी। इसके उत्पादनएवं वितरण का आधार जन सहयोग होगा। यहाँ मूलतः मानव श्रम की प्रधानता होगी, अतः सभी को रोजगारप्राप्त होगा। यह समकालीन विश्व में समावेशी विकास के लक्ष्य को पूरा करने में सहायक हो पाएगी क्योंकि इस अर्थव्यवस्था का आधार ही विकेन्द्रीकरण है।

आज वैश्विक स्तर आर्थिक असमानता, नगरीकरण से उत्पन्न समस्याएँ व पर्यावरण सम्बन्धी गम्भीर समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। गांधीजी इस औद्योगिक सभ्यता के पूरी तरह विरूद्ध थे। उनका मत है कि औद्योगिकरण ही विश्व में तनावों, संघर्षों और युद्धों की आंकाक्षाओं का प्रमुख कारण है। इसके कारण बेरोजगारीव आय की असमानताएँ आदि समस्याएँ उत्पन्न हो ने लगती है। साथ ही औद्योगिकरण के कारण वैश्विक समाजका नैतिक पतन भी होता है क्योंकि राष्ट्र आत्मनिर्भर होने की अपेक्षा अन्य राष्ट्रों पर निर्भर होते चले जाते हैं।गांधी जी ने कहा है कि औद्योगिकरण के कारण इन पश्चिमी राष्ट्रों का अनिवार्य नैतिक पतन हो रहा है, क्योंकिइन्हें अपनी अर्थव्यवस्था को बनाए रखने के लिए अन्य राष्ट्रों का शोषण करना पड़ रहा है। औद्योगीकरण से ग्रामआधारित अर्थव्यवस्था का स्वरूप नष्ट हो जाता है व क्षेत्रीय असंतुलन व गांव व शहरों के मध्य विरोध जैसीअनेक समस्याएँ भी उत्पन्न हो जाती है। उनका कहना है "आज एक छोटे

से देश (इंग्लैण्ड) के आर्थिकसाम्राज्यवाद ने सारे संसार को गुलामी की जंजीर में बांध रखा है। यदि तैंतीस करोड़ लोगों का समुदाय भी यहआर्थिक शोषण का मार्ग अपना ले तो वह संसार को पूरी तरह तबाह कर देगा। यंत्रों पर आधारित औद्योगिकअर्थव्यवस्था उत्पादन कार्य में लगे श्रमिक को उसकी वैयक्तिकता तथा सृजन के नैतिक सुख से भी वंचित करदेती है। जिससे व्यक्ति का नैतिक पतन भी होता है। औद्योगिकरण एक ऐसी विकृत सभ्यता व संस्कृति को जन्मदेता है जिससे मानव व उसके नैतिक मूल्यों की उपेक्षा होती है। यह शहरीकरण की प्रक्रिया में वृद्धि करता हैजिससे सामाजिक व आर्थिक अपराध बढ़ते है व पर्यावरण को क्षति पहुँचती है।

समकालीन विश्व में बेरोजगारी की समस्या निरन्तर बढ़ती चली जा रही है। आज की शिक्षा मात्रकिताबी ज्ञान रह गयी है, जो रोजगार प्राप्ति में सहायक नहीं है। गांधीजी के शिक्षा सम्बन्धी विचार पर्याप्तव्यावहारिक है जिसमें उन्होंने शिक्षा को व्यक्ति व समाज दोनों के आधारभूत हितों की पूर्ति का साधन माना है।उन्होंने बुनियादी शिक्षा के द्वारा बेरोजगारी की समस्या का हल प्रस्तुत किया है। उनके इस विचार को विश्व मेंलागू करने की महत्ती आवश्यकता है।

वैश्वीकरण के इस दौर में केन्द्रीकरण व वैश्विक असमानता आदि का एक प्रमुख कारण गांधीजी केस्वदेशी के विचार को न अपनाना रहा है। स्वदेशी का विचार विकासशील व अल्पविकसित देशों की अर्थव्यवस्थाके संरक्षण में और भी महत्त्वपूर्ण है। समकालीन समय में वैश्विक स्तर पर वही राष्ट्र शक्तिशाली माना जाता हैजो अधिकांश मामलों में आत्मनिर्भर हो। आज नव उपनिवेशवाद इसी कारण बढ़ता चला जा रहा है। आज भीविभिन्न विकसित देश आर्थिक संरक्षणवाद की नीतियाँ अपनाकर स्वदेशी के विचार को ही पुष्ट कर रहे हैं।गांधीजी के अनुसार स्वदेशी के द्वारा हम आर्थिक क्षेत्र में समानता, न्याय, स्वतन्त्रता एवं स्वावलम्बन के लक्ष्यों कोप्राप्त कर सकते हैं। यह विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था की स्थापना करता है। गांधीजी ने चरखा और खादी को स्वदेशीपर आधारित अर्थशास्त्र के दो प्रभावशाली प्रतीक बताया और कहा कि ये दोनों भारत के हजारों गांवों में फैलीहुयी गरीबी और बेरोजगारी की समस्या का समाधान कर सकते हैं। स्वदेशी का विचार सभी देशों के प्रसंग मेंराष्ट्रीय स्तर पर स्वावलंबी व आत्मनिर्भर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है। साथ ही यहअनुपूरक रूप में आर्थिक क्षेत्र में राष्ट्रों के बीच सीमित एवं मर्यादित रूप में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं विनिमय कोमान्यता भी देता है।

इसी प्रकार महात्मा गांधी ने श्रम की गरिमा व कायिक श्रम को भी महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है।गांधीजी का मत है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जीविका का उपार्जन शारीरिक श्रम के द्वारा ही करना चाहिए।इसे उन्होंने 'पसीने की रोटी कहा है।' गांधीजी प्रकृति के नियम को स्पष्ट करते हैं कि 'महान प्रकृति की इच्छातो यही है कि हम रोटी पसीना बहाकर कमाये।' उनके अनुसार इससे बीमारियाँ घटेंगी और स्वास्थ्य एवं आयु मेंवृद्धि होगी। उपज भी बढ़ेगी, आत्मनिर्भरता बढ़ेगी। बेरोजगारी, आर्थिक असमानता, दरिद्रता व शोषण का अन्तहोगा। इससे सभी व्यवसायों को भी समान महत्व प्राप्त होगा, समाज में ऊँच–नीच का भेद खत्म होगा,सामाजिक सहयोग में वृद्धि होगी व समावेशी विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा।

गांधीजी बड़े यंत्रों पर आधारित, अनियंत्रित विकास के विरूद्ध थे। उन्होंने विकसित यंत्रों पर आधारितऔद्योगिक व्यवस्था को मानवता के समक्ष उपस्थित समस्याओं का मूलभूत कारण माना है। मशीन के विकास एवं औद्योगीकरण से एक राष्ट्र के पास दूसरे राष्ट्र का शोषण करने की क्षमता आ जाती है। उनका मानना है कियदि मशीनों पर मनुष्य की निर्भरता बढ़ती ही गई तो एक दिन मशीन मनुष्य को नियंत्रित करेंगी और यहअवस्था मानवीय सभ्यता के पतन का प्रतीक होगी। यह मनुष्य के श्रम को प्रतिस्थापित कर उसका स्थान लेलेती है और बेरोजगारी को जन्म देती है। गांधीजी सीमित अर्थ में मशीन की उपयोगिता को स्वीकार करते थे।वे मात्र भारी व जटिल मशीनों के विरूद्ध थे। इस प्रकार उनका उद्देश्य यंत्र का विरोध करना नहीं अपितु मानवकल्याण को सुनिश्चित करना है।

समकालीन विश्व में कुछ चुनिंदा पूंजीपतियों ने आर्थिक संसाधनों पर नियन्त्रण कर लिया है, वहींदूनिया का एक बड़ा भाग नारकीय जीवन जीने पर विवश है। ऐसे में गांधी द्वारा सुझाया गया प्रन्यास सिद्धान्तबहुत ही महत्त्वपूर्ण हो उठता है। यह पूंजीवाद की बुराईयों का अहिंसक प्रतिकार प्रस्तुत करता है। इसकेअनुसार पूंजीपतियों के हृदय परिवर्तन का प्रयत्न किया जाए ताकि वे अपने नियंत्रण में आने वाली सम्पत्ति कोअपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति न समझे बल्कि उसे जनता की धरोहर समझकर अपने–आपको उसका न्यासधारी यासंरक्षक समझे और उसका उपयोग सम्पूर्ण समाज की उन्नति एवं कल्याण में करने को तत्पर हो। इसका सबसेबड़ा लाभ यह होगा कि समाज उद्योग और वाणिज्य के क्षेत्र में उद्यमशील और प्रतिभाशाली व्यक्तियों की योग्यतासे तो पूरा फायदा उठाएगा, परंतु सम्पत्ति से पैदा होने वाले शोषण और अन्याय से मुक्त रहेगा। प्रन्यास सिद्धान्तके द्वारा गांधीजी पूंजीवादी व साम्यवादी दोनों व्यवस्था के दोषों को दूर करते हैं व आर्थिक

समानता की स्थापना पर बल देते हैं आज भी समाज में बिल गेट्स, मार्क जकरबर्ग, अजीम प्रेमजी, वारेन बफेट जैसे कई उद्योगपतिहैं जो अपनी आय का बड़ा हिस्सा समाज सेवा में खर्च करते हैं। इसी प्रकार भारत सरकार के द्वारा भी 2013 मेंकार्पोरेशन सोशल रिस्पोन्सबिलिटी कानून पारित किया गया है जिसके अनुसार एक कम्पनी को अपनी कुल शुद्धआय का कमसेकम 2 प्रतिशत भाग सामाजिक कार्यों पर खर्च करना होता है।

इस प्रकार समकालीन विश्व में उत्पन्न हुयी विभिन्न आर्थिक समस्याओं का हल गांधीवादी प्रतिमान के अंतर्गत मिलता है। क्योंकि वैश्विक अन्य सभी प्रतिमान भौतिक विकास पर आधारित हैं जबकि गांधीजी का आर्थिक प्रतिमान नैतिक विकास पर बल देता है। सत्य व अहिंसा इसके केन्द्र में है। यह समावेशी विकास का प्रतिमान है अतः सभी समस्याओं का व्यावहारिक हल प्रस्तुत करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दू, 21 दिसम्बर, 1931.
2. ओ.पी. गाबा, राजनीति विचारक विश्वकोश, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा 2014, पृ.सं. 103
3. हरिजन, 20 जून, 1936
4. मो.क. गांधी (सम्पा. सिद्धराजढ्डढा): मेरे सपनों का भारत (संक्षिप्त); पृ. 24.
5. यंग इंडिया, 11 अप्रैल, 1929